हिन्दी के समकालीन कवि
सर्जना के आयाम

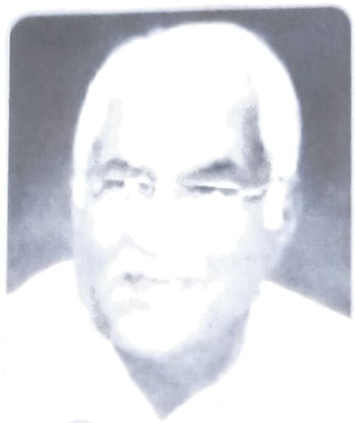

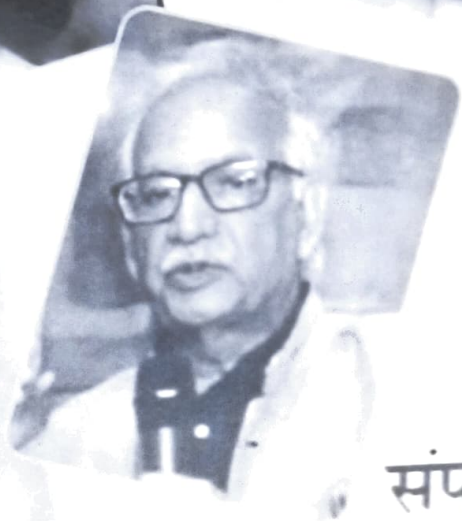

संपादक
डॉ. नीतू परिहार

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम

संपादक

डॉ० नीतू परिहार

अंकुर प्रकाशन
ANKUR PRAKASHAN

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम
ISBN : 978-81-86064-88-7
© : लेखक
मूल्य : पाँच सौ रुपये
संस्करण : 2022
प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. : (0294) 2417094, 2417039
(मो.) 9413528299
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com
आवरण : एन.वी.आर्ट, उदयपुर
टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली
मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस,दिल्ली

Hindi Ke Samkaleen Kavi : Sarjana Ke Ayam (Hindi Literature)
Edited By : Dr. Neetu Parihar

₹ 500

अनुक्रम

1 विश्वास के दीये-सी टिमटिमाती : वर्तिका नन्दा—
डॉ. नीतू परिहार 13

2 अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी जीवन—
डॉ० नवीन नन्दवाना 22

3 आखर अनन्त और जीवन में आस्था के कवि :
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—*डॉ० प्रीति भट्ट* 33

4 धूमिल : स्वातन्त्र्योत्तर कविता के उज्ज्वल 'मोची राम'—
डॉ० महेश चन्द्र तिवारी 42

5 पवन करण की कविताओं में प्रतिबिम्बित नारी—
डॉ० नीता त्रिवेदी 50

6 ममता कालिया की कविताओं में स्त्री-संघर्ष की गूँज—
डॉ० उषा शर्मा 64

7 मंगलेश डबराल की कविताओं का सामाजिक स्वर—
डॉ० ममता पानेरी 71

8 विजयदेव नारायण साही : सरल धरती का अभिलाषी
कवि—*डॉ० कैलाश गहलोत* 77

9 अनामिका के काव्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति—
एकता देवी 86

10 समकालीन बोध और धूमिल की कविता—
विद्याप्रभाकर डॉ० कनुप्रिया प्रचंडिया 94

11 अनामिका : काव्यगत पृष्ठभूमि—*डॉ० वसुन्धरा उपाध्याय* 102

5

पवन करण की कविताओं में प्रतिबिम्बित नारी

—डॉ० मीना

पवन करण आधुनिक हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। आपकी कविताएँ दर्शन, समाज, राजनीति, पुराख्यान, जीवन के प्रत्येक क्षण, मानव मन की सूक्ष्म भावनाओं को जिस सहजता से अभिव्यक्त करती हैं उसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने मन का दर्शन बड़े ही निश्चल भाव से कर पाता है। यह आपकी लेखनी की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है जो व्यक्ति से उसके ही मन का साक्षात्कार निर्विकार भाव से करा पाता है। आप की कविताएँ व्यक्ति के मन का वह दर्पण है जहाँ वह अपने सभी सूक्ष्मातिसूक्ष्म मनोभावों के साथ नितान्त एकाकी खड़ा है। मन का दर्पण केवल उसके बाह्य आवरण को ही नहीं, मन की परतों के नीचे दबे छिपे सभी भावों का अपने नग्न रूप में दर्शन कराता है। व्यक्ति ना तो अपनी आँखें बन्द कर उस दर्पण से दूर जा सकता है और न ही सहज भाव से अपने ही मनोभावों से नजरें हटा सकता है। पाठक केवल तिलमिलाकर, बड़ी बेचैनी के साथ मूक दृष्टा बन उन सभी भावों के सामने खड़ा बेबस सा दिखाई पड़ता है।

पवन करण की कविताओं में स्त्री जीवन, उसके मन के विविध भावों, अनुभावों, संघर्षों तथा अभावों की सहज अभिव्यक्ति है। पवन करण की कविताओं में स्त्री मन अपने सभी द्वन्द्वों, संघर्षों, आत्मविश्वास, आस्था, जीवन मूल्यों के साथ मुखरित हुआ है।

18 जून, 1964 ई. को ग्वालियर (म.प्र.) में जन्मे पवन करण समकालीन कविताओं के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। आपने जनसंचार एवं मानव संसाधन विकास में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आपके 8 काव्य-संग्रह प्रकाशित

है इस तरह मैं', ''स्त्री मेरे भीतर'', 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन', 'कहना यही था', ''कोट के बाजू पर बटन'', 'काल की थकान' और 'स्त्री शतक' (दो खंडों में)। आपका कविता संग्रह ''स्त्री मेरे भीतर'' मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, उर्दू तथा बांग्ला में प्रकाशित हो चुका है। इस संग्रह की कविताओं का नाट्यानुवाद एवं मंचन भी हो चुका है। आपकी कविताओं का भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त रूसी और अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है।

आपने नवभारत ग्वालियर में साहित्यिक पृ. 'सृजन' का 5 वर्षों तक संपादन किया। नई दुनिया में साहित्य पर केन्द्रित साप्ताहिक स्तंभ 'शब्द प्रसंग' का लेखन भी आपने किया। आपको अपनी साहित्यिक कृतियों के लिए कई सम्मान भी मिले हैं—'इस तरह मैं' पर रामविलास शर्मा पुरस्कार (म. प्र. साहित्य अकादमी 2000) एवं रजा पुरस्कार (म.प्र. कला अकादमी 2002) प्राप्त हुआ।''स्त्री मेरे भीतर'' पर वागीश्वरी सम्मान (म.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन 2004), मास्को (रूस) का पुश्किन सम्मान (भारत मित्र समाज, मास्को 2006), शीला सिद्धांतकर स्मृति सम्मान (राग विराग कला केन्द्र, दिल्ली 2007), परम्परा ऋतुराज सम्मान (परम्परा, दिल्ली 2009), केदार सम्मान (केदार शोध संस्थान, बाँदा 2012) तथा स्पन्दन सम्मान आदि अनेक सम्मान आपको मिले हैं।

पवन करण की कविताएँ जीवन की कविता है, जहाँ जीवन का प्रत्येक क्षण, मानव मन की सूक्ष्म भावनाएँ अपनी सहजता में परिव्याप्त है। ये कविताएँ जीवनानुभवों के उस प्राकृतिक सोते के समान हैं जो अपनी राह स्वयं बनाता, उन सभी अनगढ़ रास्तों के बीच से सहज ही निर्बाध गति से आगे बढ़ता चलता है। उनकी कविताएँ अभिधा में हमसे बात करती है, बिना किसी लाग लपेट के। पवन करण का कविता संग्रह 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन' के फ्लैप पर उद्धृत पंक्तियाँ भी इसी को स्पष्ट करती है—''ये कविताएँ उन्हीं लोगों के शब्दों और मुहावरों में बात करती हैं जिनकी ये कविताएँ हैं यानी हम और आप। यहीं हमारे सामने से शुरू होकर और हमारे देखते ही देखते हमारी दृष्टि सीमा से ऊंचे, कहीं अबूझ और अपार होती व्यवस्था के प्रति हमारी प्रतिक्रिया भी इन कविताओं में है, और विषाद भी। हमारे जीने का उछाह भी इनमें है और अवसाद भी। इनमें हमारा बड़ा होना भी है और छोटा होना भी, हमारी हिंसा भी और हमारी करुणा भी।''[1]

पवन करण अपनी कविताओं की भाषा में जितने सहज, सरल एवं संवेदी हैं उनकी कविताओं के विषय चयन में वे उतने ही अलग हैं और बाकी कवियों से विशिष्ट भी। वे अपनी कविता के विषय चयन को लेकर सारी वर्जना के

विपरीत किसी पुरानी परम्परा का अन्धानुकरण न करते हुए ... विषय. जीवन के प्रत्येक क्षण का यथार्थ बहुत ही सहजता से ... यही कारण है कि हिंदी कविता में शायद पहली बार '...' ... प्रवेश पाया है। 'स्त्री मेरे भीतर' कविता संग्रह की भूमिका में ... है—''एक औरत जो अपनी युवावस्था में अचानक विधवा हो ... वर्षों उस अकेलेपन और निराशा में गुजारे हों, जिसमें दुनिया की ... सिर्फ अपने व्यक्तिगत दुःख की छाया ही नजर आती है, उसके जीवन में ... चुपके से कोई पुरुष आए (वह पुरुष विवाहित है या अविवाहित, यह ... रखता और बहुत उचित ही पवन ने इस बारे में कविता में मौन बरता है ... उसके इस तरह आने का सिर्फ मौन स्वागत ही उसकी बेटी न करे, ... अपने को केवल दुनिया की सबसे खुशनसीब लड़की ही न समझे, ... वजह से बौराई-पगलाई-सी रहे और उसे अपनी प्रेम करती हुई माँ उसके ... की ही कोई शरारती, चंचल और हंसमुख लड़की लगने लगे, इस तरह ... इससे पहले कहने और समझने का साहस किसी कवि ने नहीं किया।''[2]

जिस सहज भाषा में एक पुत्री अपने मृत पिता की फ्रेम से बात करते ... अपनी माँ के प्रेम को व्यक्त करती है वह पवन करण की कविता के कथ्य की ... महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। जिस गहन संवेदना को सहज शब्दों में एक पुत्री के ... माध्यम से प्रस्तुत करना बिना किसी अश्लीलता के विषय को एक महत्त्वपूर्ण ... स्थान देती है—

अब तुम्हें वाकई नहीं मालूम पिता कि माँ
इस उम्र में कितनी खूबसूरत देती है दिखाई
और प्रेम करती हुई माँ को देखती
मैं क्यों न फिरूँ बौराई
प्रेम करती हुई माँ इन दिनों
बिल्कुल मुझ जैसी लगने लगी है
जैसे मेरी स्कूल की कोई सहेली
शरारती चंचल और हंसमुख[3]

पवन करण की कविताओं ने स्त्री मन को एक मुखर अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविताओं में झांकता स्त्री मन अपनी हर घुटन, हर चीत्कार, अपना हर दर्द, हर संवेदना को बड़े ही संयत और सहज रूप में प्रस्तुत करता है। यह सहजता ही उन पात्रों से आत्मीयता जुड़ाती है, पाठक को उन अहसासों का साझी बनाती है।

पवन करण की कविताओं में आई नारी पात्र केवल अपनी व्यथा कथा ही नहीं सुनाती, केवल संवेदना का विषय ही नहीं बन कर आती, वह अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ कविताओं का केन्द्र बिन्दु बनकर उभरती है। उनकी कविताओं में नारी मन को अनेक पाते हैं जहाँ वह पारिवारिक, सामाजिक अंकुशों के भीतर भी अपनी आवाज तोल रही है। अपने आत्मविश्वास को परख रही है। अपना विरोध, अपना विद्रोह व्यक्त कर रही है किन्तु बहुत ही संयम और धैर्य के साथ। बड़ी सहजता से परम्पराओं को करवट देते हुए परिवर्तित कर रही है। वह स्त्री विमर्श का बिगुल बजाते हुए क्रान्ति की अलख नहीं जगाती किन्तु अपने आप को बदलते हुए, यथार्थ को स्वीकार करते हुए अपने जीवन मूल्यों के साथ आगे बढ़ रही है। हाँ, स्त्री शतक के दो खंडों में उन्होंने पौराणिक स्त्री पात्रों के माध्यम से प्रश्न तो उपस्थित किए हैं इस पुरुष वर्चस्ववादी समाज के समक्ष। मैं अपने आलेख के माध्यम से पवन करण की कविताओं में व्याप्त इसी नारी मन की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करने का प्रयास करूँगी।

पवन करण की कविताओं में स्त्री–पुरुष संबंधों के अनेक भाव चित्र बिखरे हुए हैं। ये सभी विषय हमारे आसपास के जीवन में बिखरे हुए मिल जाएँगे इसी कारण हम इन्हें पढ़कर असहज नहीं होते बल्कि इन विषयों को कविता के विषय के रूप में देख कर आगे बढ़ने से पहले कुछ रुक कर गम्भीर होकर चिन्तन अवश्य करते हैं। पवन करण के काव्य–संग्रह 'कोट के बाजू पर बटन' के फ्लैप पर उल्लिखित उद्धरण से शायद बहुत अधिक स्पष्ट हो पाए—"भले ही टेकनोलॉजी और मैनेजमेंट के प्रशिक्षण ने बहुत जगहों पर आदमी को ही हाशिए पर सरका दिया हो किन्तु मध्यवर्गीय भद्रलोक की वर्जनाओं से भिड़न्त की धमक वाली ये कविताएँ पाठक के संवेदनतन्त्र में कुछ अलग ही प्रकार से हलचल पैदा करती हैं, क्योंकि भारतीय समाज अभी अपना नग्न फोटोसेशन कराने को उत्सुक प्रेमिका तथा बेटी और प्रेमिका के बीच पिता के प्यार के अन्तर तथा विवाह की तैयारी करती प्रेमिका से पति की आन्तरिकता को जानने को उत्सुक आहत प्रेमी को अपने संस्कारों के बीच जगह नहीं दे पाया है।"[4]

अपनी कई कविताओं में पवन करण ने पुरुष मन के माध्यम से स्त्री को समझाया है। पुरुष की सोच में स्त्री के मनोभावों की अभिव्यक्ति बड़े ही निश्चल रूप से की है। 'अपने विवाह की तैयारी करती प्रेमिका' कविता में प्रेमिका अन्तर्द्वंद तो स्पष्ट ही दीखता है जो अपने ऑफिस में कार्यरत अपने प्रेमी से अपने ही विवाह की तैयारी करते रहने के बीच भी अपने प्रेम को अभिव्यक्त करती है

साथ ही होने वाले पति के प्रति उसमें तनिक भी अनुरक्तता नहीं दीख
तो उसे अपना सकता है और उसे किसी और का होते देखने का दुःख
में पुरजोर दिखाई देता है। प्रेमिका की अभिव्यक्ति का खुलापन भी
सौंधी-सी खुशबू का झोंका सा लगता है—

मगर मैं उसके साथ एक दिन भी नहीं रहने वाली
तुम्हारे और अपने घर के कहने पर मैं यह शादी कर रही हूँ
तुम जानते हो न तुम्हारे बिना नहीं रह सकती मैं
छोड़ कर चली आऊँगी सब, सुन रहे हो न
मैं हताश उसकी बेचैनी पर हाँ मैं हिला देता हूँ अपना सिर

'फोटोसेशन' कविता में अवश्य स्त्री की बहुत ही नितान्त वैय
अभिव्यक्ति, खुलापन, स्त्री स्वातन्त्र्य का एक अलग पक्ष उभरता है, कि
कविता में स्त्री विमर्श के कई नए आयाम भी दृष्टिगत होते हैं—

जिसे तुम बार-बार मुझ पर लुटा देने की कहते हो
मुझे तुम्हारी वह जान नहीं चाहिए
नहीं चाहिए मुझे तुम्हारी वह ओट
जिसके पीछे मैं खुद को सुरक्षित मानतीआई हूँ
मैं उस ओट से बाहर आकर/तुम्हारे आगे खड़ी होना चाहती हूँ

स्त्री के जीवन का यह एक क्रान्तिकारी पक्ष है जहाँ वह अपनी देह क
बन्धन नहीं मानती और ना ही सात जन्मों के रिश्तों पर विश्वास करती है वह इ
एक जीवन को ही खुलकर, भरपूर जीना चाहती है अपनी सभी इच्छाओं
कामनाओं की पूर्ति के साथ—

मुझ पर बहुत भार है अपनी इस देह का
मैं खुद को हल्का महसूस करना चाहती हूँ,
तुम्हारे साथ सपनों और चाहतों से लबालब सात नहीं
बस एक जीवन जीना चाहती हूँ
और उसी चाहत भरे जीवन से निकलकर बाहर आई
यह मेरी एक इच्छा है जिसे मैं पूरा करना चाहती हूँ
मैं तुम्हें ये भी बता देना चाहती हूँ ये कोई
ऐसी पहली और अन्तिम इच्छा नहीं मेरी
इसके बाद भी मैं इच्छाओं और कामनाओं से
लबालब एक लड़की ही रहूँगी
मैं इस इच्छा के पूरी होते ही कोई कैवल्य नहीं पा लूँगी[7]

बिना किसी लाग लपेट बिना किसी आवरण के नारी भूमिका का सहज अवबोध पवन करण की कविताओं को महत्वपूर्ण बना देता है। 'दरअसल उसको समझना खुद को समझना है' कविता में कवि ने पुरुषों के माध्यम से स्त्री चरित्र को समझा है। एक पुरुष अपनी पत्नी के उसके प्रेमी के साथ रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद की स्थिति पर अपने मित्र के साथ विचार कर रहा है। कवि मित्र के माध्यम से पुरुष मन को आईना दिखाता है कि जब तुम किसी और की पत्नी के साथ प्रेम में रत रहते हो तब उस स्त्री के पति और हम प्रेमी क्या अलग अलग पुरुष हैं?—

दरअसल उसे समझना खुद को समझना है
इस बात का कोई अर्थ नहीं कि तुम्हीं-
इसके शिकार क्यों हुए मैं तुम्हीं से पूछता हूँ
तुम्हें ही इस सब का शिकार क्यों नहीं होना चाहिए था[8]

पवन करण ने अपनी कविताओं में नारी मन को कभी नारी की नजर से देखा है तो कहीं पुरुष चरित्रों की नजर से भी स्त्री संबंधों के कई कई रूप उकेरे हैं। ऐसी ही एक कविता है—'एक खूबसूरत बेटी का पिता' जहाँ पिता अपनी बेटी की सुन्दरता पर चिंतित है। यह कविता बड़े ही सुन्दर एवं भावुक शब्दों में एक पिता की अभिव्यक्ति है। अपनी युवा बेटी के भविष्य, उसके सपनों, उसके प्रेम को सहारा देता एक पिता अन्त में आश्वासन देता अपनी पुत्री को—

सिर्फ भय ही नहीं एक खूबसूरत बेटी का पिता होने का
जो उल्लास होना चाहिए मेरे भीतर
वह मेरे भीतर है और दो गुना है
फिर भी मेरी चिन्ता में मेरी बेटी की खूबसूरती
शामिल है और शामिल है यह दृढ़ता
यदि इस सब के बावजूद भी
उससे कोई गलती होती है तो हो जाए
उसके पीछे उसे उबारने के लिए मैं खड़ा हूँ तत्पर[9]

पिता-पुत्री के संबंधों की कई कविताएँ पवन करण ने लिखी है। 'वह अब मुझसे भी डरने लगी है' कविता में पिता का अपनी बेटी की उम्र की लड़की से प्रेम करना तथा अपनी बेटी की नजरों में अपने पिता के प्रति भय को पवन करण ने एक अलग ही भूमि पर रचा है। जहाँ पिता अपनी बेटी की आँखों में अपने लिए भय को पाता है—

मैं अब उसके लिए पिता नहीं रहा
मुझमें अब उसे एक पुरुष नजर आने लगा है
उसे मेरे चेहरे में अब उस औरत का चेहरा
दिखाई देने लगा है जिसे लेकर इन दिनों
उसकी माँ की साँस गले में अटकी है
जिसके प्रेम मे में इन दिनों बेतहाशा डूबा हूँ[10]

पिता को यह खीझ है कि उसकी बेटी अब उससे नजरें चुराती है। मन में यह संकोच है कि शायद इन दिनों में उसे उन आवारा, मनचले लड़कों लगता हूँ जो उसे रास्ते चलते छेड़ते हैं। पिता को लगता है कि मैंने अपने पाकर, बेटी की नजरों में अपना पिता होना खो दिया है। पिता के लिए अपने की उम्र की प्रेमिका द्वारा बेटी से खुद की तुलना करना भी संकुचित कर

और उस वक्त तो खुद को लेकर
बेटी के भीतर पैदा हुआ भय
मुझे सच लगने लगता है
जब वह जिसके प्रेम में इन दिनों
खोया हूँ मैं अगाध, अपनी तुलना
मेरी युवा बेटी से करते हुए
मुझसे पूछती है, बताओ दोनों में से
तुम किसे ज्यादा प्यार करते हो
अपनी बेटी को या मुझे[11]

इस कविता में पिता अपनी पुत्री के मनोभावों को समझ रहा है। उस संवेदना से जुड़ा है पुत्री के प्रति उसका मन। यहाँ पिता बेटी के मन को पढ़ने प्रयास कर रहा है। इसी प्रकार की एक और कविता है—'पिता की आँख में औरत'। इस कविता में बेटी अपने पिता के मन को पढ़ रही है स्थिति कमोबे वही है बस नजरिया थोड़ा सा बदला है। इसमें पुत्री अपने पिता के प्रेम के कहीं न कहीं संवेदनशील भी है। वह अपनी माँ और पिता के संबंधों की प्रकार से व्याख्या करती है। वह पिता से झगड़ा भी करना चाहती हैं पर पिता प्रेम को समझने का प्रयास भी करती है—

एक बार तो उसके मन में आया वह अपने सामने बिठाकर
पिता को डांट दे बुरी तरह, ज्यादा हो तो झापड़ जड़ दे दो-चार
उनसे कहे क्या हो रहा है ये सब

जाता यह सब आपको अच्छा नहीं लगता अब
देखो ये भी अब बड़ी हो गयी है।
यह सब करने की तो अब मेरी उम्र है
कहना जब अपने भीतर किसी नवयुवक की बेचैनी लिए
घूम आता घर से बाहर
अपने पिता को देख तो खुद को समझाती है
यही था मेरे बड़े हो जाने का मतलब
यह नहीं कि थक गये हैं पिता शायद
उनका जीवन शुरू हुआ यहीं से''

पिता- पुत्री संबंधों के कई- कई आयाम पवन करण की कविताओं में स्वतन्त्र एवं निर्बाध रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का एक और पक्ष है जहाँ पुत्री अपने मृत पिता को अपनी माँ के प्रेम के बारे में बताती है। इस कविता में कवि ने पुत्री के माध्यम से स्त्री के प्रति जो उदार संवेदनशीलता दिखाई है वह समकालीन हिंदी कविता की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इस कविता में उस पुत्री की खुशी में संवेदना की वह उजास है जो उसकी माँ के जीवन में कई वर्षों के बाद आई है। वह पुत्री साक्षी है अपनी माँ के उन दु:खों भरे वर्षों की जो उसने वैधव्य के कारण बिताए हैं वह माँ के अपने मृत पति के प्रेम को भी जानती है तभी वह खुश है। विष्णु नागर के शब्दों में—''पूरी कविता में कवि कहीं हस्तक्षेप करता नहीं दीखता, अन्धेरे में दिया लेकर चलने का अभिनय करता नहीं दीखता, वह अपनी कविता को पूरी तरह प्यार में डूबी हुई माँ की बेटी के हवाले कर देता है और उसे ही बोलने देता है। यह कविता उस लड़की की कविता है या कहें गीत है, उसकी गुनगुनाहट है, उसके बौराएपन का संगीत है।''[13]

स्त्री-पुरुष संबंधों के अतिरिक्त स्त्री से जब सामाजिक संबंध टकराए, जहाँ परिवार और स्त्री के विचार आमने- सामने आए उन कविताओं में स्त्री मन अपनी तमाम वर्जनाओं के बावजूद उभर कर आया। पवन करण की कविताओं में स्त्री अपने हक के लिए आवाज उठाना शुरू कर देती है। 'हक' कविता में स्त्री का अपने परिवार से संघर्ष मुखर है—

मैंने अपनी पसन्द के पुरुष को प्रेम- पत्र लिखा
तुमने मेरी पढ़ाई बन्द करवा दी
मैं अपनी चाहत के पुरुष से छुपकर मिली
तुमने घर के दरवाजों में कैद कर दिया मुझे

मैंने अपनी इच्छा के पुरुष से
प्रेम-विवाह करने को कहा, तुमने कोशिश की
मेरी जुबान पर ताला डालने की
मैंने तुम्हारी इच्छा के खिलाफ जाकर अपना ब्याह रचाया
तुमने मेरे साथ-साथ उसे भी मार डाला
या फिर मुझे मरा मान लिया हमेशा के लिए[14]

स्त्री का विरोध यहीं समाप्त नहीं होता। वह प्रश्न करती है, अपने
अपना हक माँगती है—

तुम भले ही मुझे मरा मान लो
और कभी मेरा चेहरा ना देखो
मगर उससे पहले मेरे हिस्से का पैसा तो मुझे दो
मेरे पूछने पर तुम ही तो कहते थे
हम अपने हक के लिए लड़ते आए हैं
प्रेम पर मेरा हक था तो पैसे पर भी तो मेरा हक है
क्या मुझे अब इसके लिए भी लड़ना पड़ेगा[15]

यह अपने अधिकार के प्रति सचेत स्त्री का स्वर है जो अपेक्षाकृत अ
मुखर है। सभी स्त्रियाँ इतनी मुखर नहीं हो पाती। कुछ स्त्रियाँ विद्रोह नहीं क
बस अचानक अपनी उड़ान से अपनी सोच समाज को सौंपती है। 'उड़ान' क
में स्त्री की उसी सोच को कवि ने वाणी दी है। घर-परिवार स्त्री पर पाबन्दी ल
है, वह नहीं जान पाता कि स्त्री अपने सपनों की उड़ान को, अपने परों को स
छुपा कर खुले आकाश में उड़ना सीख रही है। एक दिन वह अपने पूरे आत्मविश्व
के साथ सपनों के आकाश में उड़ जाती है। कवि सन्देश देता है—

जो घर स्त्री की उड़ान को
नहीं पहचानते
उनसे उड़कर जाने वाली स्त्रियाँ
कभी वापस नहीं लौटती
आकाश छूकर
बस उनकी उड़ान लौटती है[16]

ये सभी स्त्रियाँ समकालीन काव्य जगत की आधुनिक स्त्रियाँ हैं जो समाज
के बीच अपनी स्थिति को स्वयं स्थापित करती हैं। पवन करण ने इसके अतिरिक्त
इतिहास के पन्नों से उपेक्षित, विस्मृत करा दी गयी उन पौराणिक स्त्री पात्रों को

अपनी कविता में स्थान दिया है। पवन करण का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है 'स्त्री शतक'। यह दो खंडों में प्रकाशित है इसके प्रत्येक खंड में सौ कविताएँ हैं। ये सभी कविताएँ उन मिथकीय स्त्री पात्रों के प्रश्न हैं इस पुरुष वर्चस्ववादी समाज से कि क्यों उन्हें इस तरह बिसरा दिया गया? पवन करण का 'स्त्री शतक' उनके काव्य जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह काव्य संग्रह स्त्री की वेदना, उसकी करुणा, उसकी निराशा या द्वन्द्व की ही अभिव्यक्ति नहीं है यह उसकी चैतन्य शक्ति, उसके साहस, उसके जीवन का जीवन्त आख्यान है। 'स्त्री शतक' पुरुषवादी सत्ता के अहंकार पर एक प्रहार है।

'स्त्री शतक' में कई कई नारी पात्रों की कथा है जो अपने आँचल में कई-कई विमर्श छुपाए हुए हैं। पौराणिक आख्यान के अनुसार 'तारा' कविता में तारा बृहस्पति की पत्नी थी, जिसे बृहस्पति का शिष्य चन्द्रमा भगाकर ले जाता है और उन दोनों के अनैतिक संबंध से बुध का जन्म होता है—

यदि तुम्हें कभी तारा मिले तो उससे पूछना
तो वह बताएगी चमक का घर
गहरे अन्धेरे में डूबा रहता है
किसी पुरुष का किसी स्त्री के चेहरे में चन्द्र देख लेना चन्द्र को
खुद उसके चेहरे का पता बता देना है[17]

इसी सन्दर्भ में 'ममता' कविता में एक और स्त्री चरित्र उभरता है जो देव गुरु बृहस्पति के एक अन्य रूप से हमारी पहचान कराता है। ममता बृहस्पति के भाई उतथ्य की पत्नी जिसके साथ गर्भावस्था के दौरान बृहस्पति ने सम्भोग किया। वह बृहस्पति से प्रश्न करती है—

तुम कौन सा मुँह लेकर चन्द्र से
तारा को वापस माँगने जा रहे हो
भाई की पत्नी होते हुए भी तुमने
जिस तरह, अपमानित किया मुझे
चन्द्र ने तो वैसा नहीं किया तुम्हारे साथ[18]

इन सभी प्रश्नों के सामने हमारा इतिहास मौन है किन्तु पवन करण की कविताओं में ये सभी स्त्रियाँ दिल खोलकर अपनी व्यथा कथा कहती है। इन दुखिनी नारियों में केवल ऋषिकुल की नारियाँ ही नहीं, राजा-महाराजाओं की रानियाँ-दासियाँ, देव पत्नी तथा देव पुत्रियाँ, साथ ही पुरुषोत्तम कहलाने वाले देवताओं की बहनें भी हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम दशरथ नन्दन राम की बहन शान्ता भी

दुःखी है। सरमा (रावण की दासी), सीता से शान्ता के बारे में

जब दशरथ उसे ऋष्यश्रृंग
को सौंप रहे थे तब क्या उसने
तुमसे कहा कि मैं किसी
ऋषि से नहीं राम भैया जैसे किसी
राजकुमार से ब्याह करना चाहती हूँ
भाभी तुम इन आर्यों को समझाओ न
कि वे मुझे यज्ञदान में नहीं सौंपे
मेरी पसन्द भी पूछे मुझसे, चलने दें
मेरी भी ब्याह की बात किसी योद्धा से[19]

एक और भी बहन है—एकानंगा (एकाँगा) जो गोकुल में कृष्ण की ब

जैसे नाम सुनकर सब शान्ता का
जताते आश्चर्य/कि राम की बहन भी थी एक
अरे हमने तो सुना ही नहीं कभी
बारे में उस लुप्त भगिनी के
खुद की अनदेखी वे बहनें थीं हम
जो अपने-अपने कालखंड की
स्मृतियों में छूटती गयी सबसे पीछे
जबकि हम में से एक
कृष्ण की बहन थी और एक राम की[20]

देवराज इन्द्र, राजा बलि से धरती हथियाने के लिए अपनी पुत्री जयन्ति
वृद्ध शुक्र को दे देते हैं। तब कवि जयन्ति से प्रश्न करता है—

जयन्ति बूढ़े शुक्र की अंकशायिनी होने से पहले
तुमने खुद के बारे में नहीं सोचा
तुम्हें पिता की बात मानने से पहले
माँ शचि एक बार भी याद नहीं आई
नहुष से खुद को बचाने में सफल शचि
तुम्हें पितृ-आज्ञा न मानने का सुझाव देती
तुम्हें बताती कि तुम्हारे पिता को स्त्री-शीलता
दाँव पर लगाने में हिचक नहीं होती

[illegible]

[illegible]

[illegible] के लिए अपनी [illegible]
[illegible]
मुझसे एक बार भी नहीं पूछा [illegible]
क्या बस मैं ही तुम्हारी अर्धांगिनी थी
तुम अर्धांग नहीं थे मेरे
क्या मेरी ही देह पर तुम्हारा
अधिकार था, तुम्हारी देह पर
कोई अधिकार नहीं था मेरा
फिर तुमने मेरी सहमति लिए बिना
अपना देह-आधार
कैसे दे दिया किसी को
तुम्हारी आज्ञा के बिना क्या मैं
कभी किसी को स्वयं का
कुछ सौंप सकती थी[22]

इसी प्रकार इस काव्य-संग्रह में कई मुखर नारी पात्र हैं—धृतराष्ट्र की दासी नयना, बाल विधवा उलूपी, घटोत्कच की पत्नी मोर्वी, विदुर की माँ इन्दु, राजा पृथु की पत्नी अर्ची, राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या, शर्मिष्ठा, दुर्योधन की पत्नी भानुमति, भीम की पत्नी हिडिम्बा, कृष्ण की आठों पत्नियाँ, रायाणी आदि की अन्य-अन्य कथाएँ हैं। 'स्त्री-शतक' की भूमिका में राधावल्लभ त्रिपाठी जी लिखते हैं—''पवन करण ने इस शतक में आख्यानों को खंगालते हुए, मिथकों में गोता लगाते हुए ऐसे स्त्री पात्र हमारे सामने खड़े कर दिए हैं जिनकी अथाह व्यथा कथा प्राय: उपेक्षित अनजानी रह गयी है।''[23]

अत: निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पवन करण की कविताएँ स्त्री मन का वह आइना है जहाँ से व्यक्ति स्त्री-जीवन को उसकी पूर्ण संवेदना के साथ

देख-सुन महसूस कर सकता है। आपकी कविताएँ स्त्री जीवन के ...
को नए-नए विषयों से रूबरू कराती हैं।

सन्दर्भ—

1. पवन करण : 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.
2. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006, भूमिका
3. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', 'प्यार में डूबी हुई मां' राजकमल प्रकाशन, नई ...
2006, पृ. 92
4. पवन करण : 'कोट के बाजू पर बटन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2013,
5. पवन करण : 'कोट के बाजू पर बटन', 'अपने विवाह की तैयारी करती प्रेमिका' ...
प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2013, पृ. 89-90
6. पवन करण : 'कोट के बाजू पर बटन', 'फोटो सेशन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई ...
सं. 2013, पृ. 45
7. वही पृ. 45
8. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', 'दरअसल उसे समझना खुद को समझना है' राज...
प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006, पृ. 90
9. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', 'एक खूबसूरत बेटी का पिता' राजकमल प्रकाशन, नई दि...
सं. 2006, पृ. 21
10. पवन करण : 'कोट के बाजू पर बटन', 'वह अब मुझसे भी डरने लगी है' राधाकृष्ण प्रका...
नई दिल्ली, सं. 2013, पृ. 20
11. वही पृ. 22
12. पवन करण : 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन', 'पिता की आँख में पराई औरत' राजकम...
प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2009, पृ. 21-22
13. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', 'प्यार में डूबी हुई मां' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.
2006, भूमिका 8-9
14. पवन करण : 'कल की थकान', 'हक' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2017, पृ. 62
15. वही पृ. 62-63
16. पवन करण : 'स्त्री मेरे भीतर', 'उड़ान' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006, पृ. 70
17. पवन करण : 'स्त्री-शतक' (प्रथम खंड), 'तारा', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली,
तृतीय सं. 2019 पृ. 17-18
18. पवन करण : 'स्त्री-शतक' (प्रथम खंड), 'ममता', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली,
तृतीय सं. 2019 पृ. 148
19. पवन करण : 'स्त्री-शतक' (प्रथम खंड), 'सरमा', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली,

[illegible] पृ. [illegible]

[illegible] पवन करण : 'स्त्री शतक' (प्रथम खंड) 'प्रकाशेन' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, [illegible] पृ. 130–131

पवन करण : 'स्त्री शतक' (प्रथम खंड) 'ज्योति' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, [illegible] पृ. 24

पवन करण : 'स्त्री शतक' (प्रथम खंड) 'सुवर्चा' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, [illegible] पृ. 188

[illegible] पवन करण : 'स्त्री शतक' (प्रथम खंड) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय सं. [illegible] भूमिका 9–10

—**सम्पर्क** :
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)—पिन : 313001
फोन न. : 9950960999
ईमेल : nkntrivedi@gmail-com

❑❑❑